मैं पुजारी था मज़ारों का

लेखक
अब्दुल मुन्इम अल-जदावी
अनुवादक
मन्सूर अहमद मदनी

باللغة الهندية

اعترافات... كنت قبوريا - للأستاذ: عبدالمنعم الجداوي

مترجم: منصور احمد مدني

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد
وتوعية الجاليات بالصنائعية القديمة
The Islamic Center at OLD SENAIAH
WWW.SENAIAH.COM

هاتف: ٤٤٨٨٩٠٥ فاكس: ٢٩٥٠٠٠٦
ص ب: ٢٥٥٠١٨ الرياض: ١١٣٥٣
TEL: 4488905 FAX: 2950006
P.O.Box: 255018 RIYADH: 11353
e-mail:info@senaiah.com

मैं पुजारी था मज़ारों का

लेखक
अब्दुल मुन्इम अल-जदावी
अनुवादक
मन्सूर अहमद मदनी

باللغة الهندية

اعترافات... كنت قبوريا - للأستاذ: عبدالمنعم الجداوي

مترجم: منصور احمد مدني

بسم الله الرحمن الرحيم

प्राक्कथन

الحمد لله رب العالمين، والصلاة والسلام على إمام الموحدين، الذي أرسله الله رحمة للعالمين، نبينا محمد، وعلى آله وصحبه أجمعين، وبعد :

यह एक ऐसे आदमी की दिलचस्प कहानी है जो एक ऐसी घड़ी से गुज़रा है जिसमें केवल अन्धकार (तारीकी) ही था, और वह तौहीद से दूर दुखित अंधेरों में भटक रहा था, कब्रों से तबर्रुक हासिल करना, उसका तवाफ करना, उस पर सर झुकाना उसका महबूब कार्य था। फिर अल्लाह तआला ने उजाले की ओर उसकी हिदयत की, और वह तौहीद का उजाला है, अल्लाह तआला जिसे चाहता है सीधे मार्ग की हिदायत देता है, फिर उसने यह किताब लिखी जिस में अपनी कहानी को इस लिए लिखा कि शायद यह दूसरों के लिए हिदायत का कारण बने।

यह कहानी "तौइया इस्लामिया" के मजल्ला (MAGAZINE) में लिखा गया फिर "तौइया इस्लामिया" के अधिकारियों ने उसे किताब की शकल में छापना चाहा क्योंकि उस में बहुत सारे लोगों के लिए नसीहत थी, इसके लेखक अब्दुल मुनइम अलजदावी बहुत अच्छे लिखने वाले हैं,

जो सलफ के मार्ग से प्रभावित (मुताअस्सिर) हैं और उसी की बड़ी हिक्मत से लोगों को दावत देते हैं।

हज का "तौइया इस्लामिया" अपनी तमाम तर इमकानात के द्वारा तौहीद का अलम बर्दार है, और पूरी हिक्मत व बसीरत और शक्ति के साथ लोगों को उसकी दावत देता है, ताकी लोग हिदायत और नूर के मार्ग को अपना लें, और गुमराही के मार्ग को पहचान कर उस से बचे रहें।

अल्लाह तआला ही सीधा मार्ग दिखाने वाला है और वही हमारे लिए काफी है, दरूद व सलाम हो हमारे नबी मुहम्मद और उनकी औलाद और साथियों पर।

प्रकाशक

ख़राफह : यानी खुराफात उस बूढ़ी औरत की तरह है जो अपने प्रेमी से चिमट जाती है और उसे कभी नहीं छोड़ती।

तौहीद: पहले मिटाती है••फिर दोबारा उठाती है••!

क़ब्रपरस्त का उस से मुँह मोड़ना सरल नहीं • • !

तौहीद :एक बड़े इरादा व हिम्मत का इच्छुक (तलब गार) है ••।

❁ ❁ ❁

इन बातों के लिखने में मैं काफी पसो पेश (सोच) में था, और इसके के कई कारण थे, इसी प्रकार फिर इसे लिखने के लिए तैयार हुआ और इसके भी कई कारण है, इसमें पसो पेश में पड़ना या इस के लिए तैयार होना दोनो के असबाब एक ही हैं, मुझे इस बात का डर था कुछ लोग विषय (मौज़ू) देख कर यह न समझ जायें कि यह किसी क़ब्रपरस्त की बकवास है•• लेकिन यह भी संभव (इमकान) है कि कुछ लोग उस क्षेत्र के जिस में मैं सहीह अक़ीदह पर आने से पहले जीवन की घड़ियाँ काट रहा था मेरे इन एतराफात को पढ़ कर अपनी आंखों को खोलें और इन ख़ुराफात के अंधेरे से निकल कर तौहीद के उजाले की ओर आयें, और यही कारण कि मैं अपने आप को लोगों के सामने पेश कर रहा हूँ, इसलिए कि शायद इसी वजा से अल्लाह तआला किसी को तौहीदे हक़ीक़ी की ओर रहनुमाई फरमा दे।

मैं क़ब्रों के बहुत बड़े क़द्रदानों (गुणग्राही) में से था जब कभी किसी शहर जाता और वहाँ किसी बुज़ुर्ग की समाधि की जानकारी होती तो तुरंत वहाँ जाता और उसका तवाफ करता, चाहे मुझे उनके करामातों (मोजिज़ा) की जानकारी रहे या न रहे, बल्कि कभी कभार मैं खुद करामातों गढ़ लेता••• या उस का तसव्वुर करता••• या उस का ख़्याल करता••• अगर मेरा लड़का इस साल में सफल हो जाये••• तो उसका मूल कारण यह था कि मैं बहुत बड़ा चढ़ावा उन क़ब्रों पर पेश कर चुका था, और अगर कभी मेरी पत्नी को तन्दुरुस्ती हो जाती तो वह उस तन्दुरुस्त बकरे की वजे से है जो मैंने फलाँ बुर्ज़ुग वलीवुल्लाह के नाम पर ज़िब्ह किया था••।

जब मेरी भेंट डा॰ जमील ग़ाज़ी से हुई और इस भेंट का कारण वह मजल्ला (MAGAZINE) था जो क़ाहिरा में जम्ईयतुल अज़ीज़ बिल्लाह के सेवा को फैला रहा था, इस जम्ईयत (समूह) की निगरानी में कई मस्जिदें थीं और उनका पहला संदेश "तौहीद" और अक़ीदह का सुधार था, बहुत सी मुलाक़ातों के कारण मुझे मस्जिद अलअज़ीज़ बिल्लाह में जुमा की नमाज़ पढ़ने का भी मौक़ा मिला, "डा॰ जमील" ने अपने खुत्बा में बहुत ही उचित (मुनासिब) और दलाइल की रोशनी में इस अक़ीदह पर सख्त खंडन (रद) किया, उसे शिर्क ठहराया इसलिए कि बंदा अपनी ग़फलत (बेख़बरी) के कारण मुरदों से सहायता का इच्छुक या ख़्वाहिशमंद होता है।

इस रद ने और इस हक़ीक़त ने मुझे हक्का बक्का कर दिया, इसलिए कि हक़ीक़त (सत्य) ग़फ़्लत (अचेतना) वालों के लिए बहुत ही परेशान कुन होती है, डा॰ जमीज अगर इसी पर बस कर लेते तो काफी हो जाता, लेकिन वह हर बार इस विषय (TOPIC) को दोहराते कि क़ब्र के अन्दर एक मरे हुए बन्दे के सिवा और कोई भी नहीं है, बल्कि कभीकभार तो वह बिल्कुल ख़ाली होती है उस में हड्डियाँ तक नहीं होतीं वह न लाभ पहुंचा सकती हैं न हानि।

❁ पहली बार मैं सरापा (सिर से पाँव तक) चकरा गया, और मेरे हवास (कुवतें) खो गये, मैं हर जुमा की नमाज़ के बाद दुखित व ग़मगीन होकर घर वापस आता, मेरे दिल पर एक बोझ होता जिस से मेरे एहसासात व इदराक दब जाते, बड़ी कोशिश करता कि इन ख़्यालात से जान छुड़ाऊँ लेकिन मुमकिन न था, क्या मैं इस लम्बे समय में गुमराही में था? या मेरे दोस्त डा॰ साहब बातों को बढ़ा चढ़ा कर काम ले रहे हैं, मेरा यह अक़ीदह था कि जो कोई कलमह शहादत की गवाही दे वह फिर किसी ग़लती से काफिर कभी भी नहीं हो सकता।

दूसरी चीज़ जो मेरे दिल को खाये जाती थी, वह डा॰ साहब का अन्दाज़ था कि उन्होंने मुझे औलिया व मुजावरीन और मशाइख़ के बराबर ठहरा दिया, जो सुबह व शाम बड़ी–बड़ी सभाओं में और मिम्बरों से यह

एलान करते थे कि जो वली को दुख देगा, वह अल्लाह तआला से लड़ाई में होगा, इस अर्थ की एक सहीह हदीस भी है, इसीलिए मैं यह नहीं चाहता था कि मज़ारों और क़ब्र वालों से लड़ाई पर उतर आऊँ, मुझ से यह नहीं हो सकता था कि मैं अल्लाह तआला से जंग का एलान करूँ।

फिर मैंने सोचा कि दिफ़ाअ का बेहतरीन तरीक़ा यह है कि दूसरों पर चढ़ाई करूँ इसी इरादे से मैंने कुछ किताबों को दोबारा पढ़ना शुरु कर दिया, जैसे ग़ज़ाली की "अहयाउल उलूम" और इब्ने अता इसकन्दरी की

"लताइफुल मिनन" ,मैं ने बहुत सी करामात, औलिया के नाम, उसके वाक़े होने के कारण वग़ैरह बिल्कुल याद कर लिए, दूसरे जुमा को गया, मैं डा॰ साहब की बातों को सुन रहा था, और अपने गुस्सा को छुपाए हुए था, बयान के बाद मुझे खाने के लिए ज़ोर दे कर बुलाया गया, खाने के बाद बिना किसी शील संकोच के मैं उनपर बरस पड़ा, जिसके दो कारण थे।

1– मैंने बहुत सी करामात याद कर लिया था।

2– मैं उनके घर में था और खाना भी खा चुका था, इसलिए मुझे इस बात का बिल्कुल डर नहीं था कि वह अपने भारी भरकम हाथों से हमारे साथ लेन–देन शुरु कर देंगे, और मैंने इस तरह की बात शुरु कीः

औलिया के पद को कोई व्यक्ति भी नहीं पा सकता, हाँ वह व्यक्ति जो दिल की सफाई में उनके पद तक पहुंच

जाए, उन्होंने अपने आप को अल्लाह तआला को सौंप दिया था, इसीलिए अल्लाह तआला ने उन्हें बहुत सी खुसूसियात से नवाज़ा था, और यह कि••• और•••।

डा॰ साहब मेरी बात समाप्त होने तक इन्तेज़ार करते रहे, और मैं यह सोच रहा था कि अब वह कुछ भी न कह सकेंगे। लेकिन मैं ने देखा कि उन्होंने कहना शुरु कियाः

क्या तुम यह अक़ीदह रखते हो इन मशाइख़ (औलिया) में से कोई अल्लाह तआला के नज़दीक उसके रसूल मुहम्मद स॰ से भी अधिक महान और उत्तम है ?

मैंने बड़े तअज्जुब (आश्चर्य) से उत्तर दिया : बिल्कुल नहीं •••

तो फिर कैसे वह हवा में उड़ सकते हैं या पानी पर चल सकते हैं या जन्नत (स्वर्ग) से फल तोड़ सकते हैं जबकि वह ज़मीन पर होते हैं, रसूलुल्लाह म ने ऐसा कोई काम नहीं किया था •••?

यह बातें मेरे लिए और मेरे सुधार के लिए काफी थीं, लेकिन बुरा हो तअस्सुब (पक्षपात) का जिसने मुझे आसानी से इस चीज़ को कुबूल नहीं करने दिया, यह कैसे मुमकिन (सम्भव) था कि मैं अपनी तीस साल की मालूमात को आसानी के साथ फेंक दूँ, सम्भव है कि वह असत्य (ग़लत) हों, लेकिन मेरे पास तो वह सत्य

(हक़ीक़त) थी, ऐसी हक़ीक़त जिस के सिवा कोई और चीज़ सही नहीं हो सकती।

❁ मैं लौटा और वह सारी किताबें फिर से पढ़ने लगा जिस से मेरी लायब्रेरी (library) भरी पड़ी थी, फिर मैं डा॰ साहब के पास जाता और रात को काफी देर तक बातें होती रहतीं, मैं सूफिया के बड़े प्रेमियों में से था क्यों •••? इसलिए कि मैं उनकी कविताओं, उनके गाने और उनके राग को बहुत पसन्द करता था उनके राग जिस में क़ौमी वरसा का असर मशरिकी फारसी और ममलूकी रागों की मिलावट थी फिर कभी अफरीक़ी तबला भी होता या किसी की ग़मगीन आवाज़ भी होती जिस में सुबह के समय मित्र (महबूब) का अपने मित्र से मिलने का चर्चा होता •••!

यह और इस जैसे असबाब के कारण मैंने सूफिया से मुहब्बत की, मैं उनसे इश्क़ रखता था और उनके बड़ों के बहुत से कविता मुझे याद थे खास कर (इब्नुल फारज़), डा॰ साहब से बात चीत के समय जो सबसे बड़ी हुज्जत हमारे पास थी वह उन जैसे

"तौहीद" के दावेदार दीन की रूह को नहीं जानते हैं बल्कि वह रूह को दीन से बिल्कुल निकाल देते हैं, उन्हें करामात का एहसास (चेतना) उस समय तक नहीं हो सकता जब तक कि वह अहले करामात के मक़ामात तक रसाई (पहुँच) न प्राप्त कर लें, मौज (लहर) को वही व्यक्ति समझ सकता है जो समुद्र को जानता है,

प्रेम का वही अन्दाज़ा (अनुमान) कर सकता है जो प्रेम का कष्ट बरदाश्त कर चुका हो, यह खुद भी हक़ीक़त में सूफिया का अन्दाज़े इसतिदलाल था, इस अर्थ में उनकी एक बहुत मशहूर कविता है •••!

मैंने डा॰ साहब से इस ख्याल से अलग हो जाने को मुनासिब समझा कि मेरे विज्दान (जानकारी प्राप्त करने की शक्ति) को ठेस न पहुंचे और मेरे जोश को तकलीफ न पहुंचे, लेकिन उन्होंने मुझे नहीं छोड़ा, मुझे उस समय बड़ा तअज्जुब हुआ जब वह मेरा दरवाज़ा खटखटा रहे थे, मुझे विश्वास न था कि यह वही डा॰ साहब हैं, वह मेरी खैरियत (कुशल, मंगल) मालूम करने आए थे मैंने बहुत देर तक उनसे बात चीत की, जब उन्होंने मुझ से जुमा की नमाज़ में न हाज़िर होने का कारण पूछा तो मैंने स्पष्ट कह दिया :

मैं आप से निराश (मायूस) हो चुका हूँ •••!

उन्होंने कहा :लेकिन मैं आप से निराश नहीं हूँ, आप में अक़ीदह की खातिर (हेतु) बहुत ख़ूबी है।

मैं समझा कि वह अपने मार्ग पर मुझे आहिसतगी से खींचना चाहते हैं, मैंने उनके पास एक किताब देखी जो "इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब" की सीरत (सवानिह उम्री) से संबंधित (मुतअल्लिक़) थी।

मैंने कहा :

आप यह किताब मुझे दे दीजिये ••• क्या यह सम्भव (मुमकिन) ••• ?

उन्होंने कहा :

यह किताब आप के लिए नहीं है लेकिन मैं वादा करता हूँ कि तुम्हें एक किताब ज़रुर दूँगा।

दिलचस्पी पैदा करने का यह आप का तरीक़ा था, मैं मांगता तो पहली बार में नहीं देते, मैंने ज़बरदस्ती वह किताब ले लिया, और वापस करने से इंकार कर दिया •••।

۞ आधी रात के बाद मैंने उसको पढ़ना शुरु कर दिया, किताब बड़ी अच्छी थी, उसलूब और तरीक़ा बड़ा निराला था, मैं सुबह तक नहीं सोया •••!

किताब अपने छोटे हजम (मोटाई) के बावजूद आंधी तूफान और भौंचाल की तरह थी, जिसने मुझे एक नया संसार दिखाया, शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब की खुद की कहानी, फिर आप की दावत की कहानी, उसमें आप की परेशानियों का चर्चा, जब कभी मैं कोई पृष्ठ पढ़ता मेरा दिल उसकी सतरों में लग जाता, अचानक मैंने किसी वजह से किताब को बन्द कर दिया, मामला सोचने का था या फिर दूसरी किताबों में तलाश करना था, मैंने अपने पापों को सोचना शुरु कर दिया कि मैंने "बसरा" में शैख़ को छोड़ दिया उनके लौटने तक सब्र नहीं किया, या मैंने "बग़दाद" में छोड़ दिया वह

"कुरदिस्तान" का यात्रा करना चाह रहे थे, हालाँकि उनके लौटने तक मुझे इन्तेज़ार करना था।

डा॰ साहब अपनी किताब में लिखते हैं "बारहवीं सदी हिजरी के मुजद्दिद (सुधारक) शैख़ुल इस्लाम इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब"

इतने लम्बे यात्रा के बावजूद भी क्या उन्होंने अपना मक़सूद (उद्देश्य) पा लिया •••?

नहीं चूँकि पूरी इस्लामी दुनिया अंधकार व मूर्खता पसती व तारीकी के तले दबी हुई थी, शैख़ अपने शहर लौटे और रंज व ग़म से उनका कलेजा फटा जा रहा था, चूँकि हर मैदान में हर जगह मुसलमान पीछे थे।

वह अपने शहर लौटे, एक ही रंज उन्हें खाए जा रहा था।

क्यों न वह लोगों को अल्लाह की ओर दावत दें •••?

क्यों न वह लोगों को मुहम्मद (स॰) के मार्ग से आगाह (सूचित) करें •••?

क्यों ••• क्यों •••?

इसीलिए तो यह अक़ीदह जिसे डा॰ साहब पेश कर रहे थे बेबुनियाद (निर्मूल) न था बल्कि बारहवीं सदी हिजरी से है, इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब सोचते हैं और यह प्रोग्राम बनाते हैं कि बड़े बड़े मज़ारों को ढा दें, ख़ुराफात को ख़तम कर दें झाड़ फूंक करने वालों का

पीछा करें जिन्होंने साफ सुथरी शरीअत को अपनी जादूगरी और झाड़ से गंदा कर दिया था, जो बाद में चल कर पवित्र बन गईं, मोमिन अगर उसे खतम करने का सोचते तो उनके दिल घबरा उठते इसी विषय में किताब के लेखक ने लिखा :

"इन कामों का क़ौम के ऊपर क्या असर होता •••?

मुवअर्रिख़ीन (इतिहासकार) इस का उत्तर देते हैं जैसे उस्ताद (अध्यापक) अहमद हुसैन ने अपनी किताब "जज़ीरह अरब में मेरे मुशाहदात (अनुभव)" में चर्चा किया कि क़ौम ने शैख़ की ख़िदमात को रद कर दिया, जैसे पेड़ों का काट देना, गुम्बदों का गिरा देना, बल्कि उन्हें अकेला छोड़ दिया ताकि अगर वहाँ कोई हानि (नुक़सान) हो तो केवल आप ही उसके शिकार हों •••!

क्या मेरे जीवन में भौंचाल पैदा करने वाली चीज़ वही डर है जो मुझे विरासत में मिली •••! वही डर था जिसने शैख़ के गाँव "ओययना" में लोगों को इस बात पर उभारा कि शैख़ को पेड़ों के गिराने के लिए अकेला छोड़ दें, और ज़ैद बिन खत्ताब के मज़ार पर मौजूद गुम्बद ढाने के लिए भी आप को अकेला छोड़ दें, कहीं वह लानत व अज़ाब का शिकार न हो जायें।

मैं लगातार पढ़ता रहा और हर पृष्ठ के साथ यह महसूस करने लगा कि मैं अपने नफ़्स (रूह) की गहराईयों में अपने वहम के एक बड़े बोझ को हटा रहा हूँ, जब मैं आधी किताब पढ़ चुका तो देखा कि अपने आप में एक

बहुत बड़ी जगह हो चुकी थी जिस से विश्वास का नूर (ज्योति) झांक रहा था लेकिन यह उस गहरी तारीकी में से निकल रहा था जो मेरे भीतर घर कर चुकी थी, यह किरन कभी चमकती कभी छिप जाती •••!

❁ डा॰ साहब मुझ पर विजय पा चुके थे ••• उन्होंने मुझे अपने आप से जंग करने के लिए छोड़ दिया था, बल्कि मुझे तौहीद की मसाफत (यात्रा) शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब के साथ पूरा करने के लिए छोड़ दिया, मैं शैख़ के विरुद्ध किए जाने वाली चालों से डरने लगा और आप पर मुझे रहम (दया) भी आने लगा, जब उन्होंने अपने शहर "ओययना" में ज़ानी औरत पर हद (मज़हबी सज़ा) लागू किया, तो "अहसा" शहर का हाकिम सूलैमान बिन मुहम्मद बिन अब्दुल अज़ीज़ अलहुमैदी ग़ज़बनाक हो गया, और आप की दावत से ख़तरा (आशंका) महसूस करने लगा इसी लिए ओययना के हाकिम (इब्ने मामर) के पास खत लिखा कि इन्हें क़त्ल कर दें, उनकी आवाज़ का गला घूंट दें और तुरंत पुराने ख़ुराफात व बकवास की ओर पलट जायें।

इब्ने मामर शेख़ का सुसर था, उनके क़त्ल में पसो पेश (संकोच) किया, उसने उन्हें एक गुप्त बैठक में दावत दी और अहसा के हाकिम का खत पढ़ कर सुनाया और स्पष्ट कर दिया कि वह उसका विरोध नहीं कर सकता, शायद शेख़ ने उसी समय इब्ने मामर के

ईमान की कमी का अन्दाज़ा (अनुमान) कर लिया, शेख़ अपने अक़ीदह पर और मज़बूती से जम गये, सरकश व बाग़ी हुक्मराँ (शासक) बराबर सत्य की ओर बुलाने वालों ही से लड़ते रहते हैं, शेख़ ने बिना किसी हिचकिचाहट के "ओययना" शहर छोड़ने को पसन्द फरमाया, नई धरती की खोज में निकल पड़े जहाँ तौहीद की खेती कर सकें।

सुबह में एक अजीब (विचित्र) शोरो गुल के कारण उठ बैठा, मेरे कानों से इन्सानी व हैवानी मिली जुली आवाज़ें टकरा रहीं थीं, मैंने सोचा शायद अभी मैं सपने और सोच में डूबा हूँ लेकिन अचानक मेरी पत्नी अच्छी सूचना लिए हुई कमरे दाखिल हुई वह कह रही थी कि उनकी खाला ज़ाद बहन जो "सईद" (एक स्थान का नाम) के आख़िरी हिस्से में रहती है, अपने पति और तीन वर्ष के लड़के के साथ सुबह की गाड़ी से आई है और उनके साथ बकरा भी है।

मैंने सोचा शायद मेरी पत्नी मज़ाक़ कर रही है या मेरी ख़ाला ज़ाद बहन जिसके बच्चे छोटेपन ही में मर जाते थे उसने अपने किसी बच्चा का नाम "ख़रुफ" बकरा रख दिया ताकी वह जीवन पाये, यह "सईद" में रहने वालों की आदत है, मैं अभी मामला की स्पष्टी (वज़ाहत) चाह रहा था कि अचानक "ख़रुफ" बकरा मेरे कमरे में चला आया, बच्चे उसके पीछे थे वह हैरान व परेशान इधर–उधर चक्कर लगा रहा था, हर चीज़

उसके ठोकर में थी, फिर उसने शीशा पर वार किया कि पूरा आईना चकना चूर हो गया।

एक ही पल में यह पूरी दुर्घटना (सानिहा) पेश आयी, इस से पहले कि मैं कुछ सोचूँ मुझे अन्दाज़ा होने लगा कि मेरे घर में चिड़ियाघर (ZOO) का दरवाज़ा खुल चुका है, हालाँकि मैं "अब्बासिया" में रहता हूँ और चिड़ियाघर "जीज़ह" में है।

मैं अपनी चारपाई से उठा, डर से मेरी पत्नी एक ओर हो गई थी और दया मांगने वाली निगाहों से मुझे देख रही थी कि मैं उस पागल जानवर को क़ब्ज़ा में करूँ, आवाज़ें और कांच के बिखर जाने से जानवर बेक़ाबू हो गया था, मैंने पहलवानी के सारे गुण को सोच कर खाट की चादर को उठा लिया इस से पहले कि मेरी कुश्ती बकरे के साथ शुरू हो मेरी खाला ज़ाद बहन दाखिल हुई, वह बहुत डरी हुई थी, वह ये समझ रही थी कि मैं उसे (बकरे को) क़त्ल कर दूँगा, उसने चीख़ कर कहा :

सोच लो यह "अल सय्यद बदवी" का बकरा है।

फिर उसने बकरे को बड़े प्यार से पुकारा, और वह उसके पास बड़े नाज़ से जाने लगा जैसे लाडला बच्चा चला जाता है, वह उसे थपकने लगी, और मुझ से कहने लगी कि वह "सईद" से उसे साथ लाई है और इस सुन्दर बकरा के पालन पोषण में उसने तीन वर्ष खर्च किये, यह उसके बच्चा की उम्र है, क्योंकि उसने

नज़र (मन्नत) मानी थी कि अगर उसका बच्चा ज़िन्दा रह जाए तो वह यह बकरा उनके चौखट पर ज़बह करेगी, कल तीसरा साल शुरु होने वाला है जो कि नज़र का समय है ।

❁ वह खुशी खुशी यह जुम्ले कह रही थी, मैं बाहर निकला उसके पति से मुलाक़ात हुई वह बहुत ही खुश था, वह मुझे उनके साथ "तन्ता" चलने की दावत दे रहा था ताकि इस बड़े जश्न को देखें वह लम्बे सफर के कारण केवल बकरा अपने साथ ले आये, जो लोग "अल सय्यद बदवी" के क़रीब रहते हैं वह तो ऊँट भेजते हैं •••

अब मुझ पर अख़लाकी फरीज़ा था कि अपनी खाला ज़ाद बहन की दिलजोई (सांत्वना) करूँ ताकि उनका बच्चा ज़िन्दा रहे वरना मैं रिश्ता-नाता काटने वाला समझा जाउँगा, मुझे इस की परवाह न थी कि उसका बच्चा ज़िन्दा रहे या मर जाये••• लेकिन उनके साथ इस शिर्किया जश्न में जाना ज़रुरी था, उस समय मैं अपने आप से प्रश्न कर रहा था कि मैं कैसे इसे समझाऊँ कि वह कुफ्र के मार्ग पर है •••? उस पर क्या गुज़रेगी जब मैं उस के इस सुन्दर सपना को चकना चूर करूँगा जिसमें वह तीन वर्ष से जी रही है ••• ?

मैंने सोचा पहले उसके पति से बात करनी चाहिये, चूंकि मर्द (आदमी) औरतों (महिलाओं) पर कुदरत (शक्ति) रखते हैं, मैं उसके पति को एक कोने में ले

गया, और जान बूझकर अपने हाथ में "इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब" नाम की किताब उठा लिया ताकि वह उसे देख सके, उसने किताब ली और उन्वान (विषय) पढ़ने ही वाला था कि उछल पड़ा जैसे उसने आग के अंगारे को छू लिया हो •••!

उसने किताब का विषय पढ़ा जिस में शेख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब की जीवन (हयात) की तफसील (विवरण) थी, बड़े ज़ोर से चीख़ा कि मैं यह क्या पढ़ रहा हूँ ? और यह किताब मुझे कहाँ से मिल गई है •••? ज़रुर किसी ने मेरे पास छोड़ दी है !!

वह जानता था मैं ठीक-ठाक आदमी हूँ अपने धर्म से मुहब्बत रखता हूँ मज़ारों का दर्शन मेरा कार्य है, और वहाँ नज़र व नियाज़ बल्कि बकरे भी पेश करता हूँ, वह दुखी निगाहों से मुझे देखने लगा कि भाग्य ने कैसे मुझे इस किताब तक पहुंचा दिया, अब मेरे लिए ज़रुरी था कि मैं उसके साथ वैसे ही पेश आऊँ जैसे डा॰ जमील ग़ाज़ी मेरे साथ पेश आय थे, यह अल्लाह तआला की मरज़ी थी मेरे परीक्षा (इम्तिहान) का समय आ चुका था, क्या यह मेरी ताक़त में है कि मैं जिन चीज़ों को पढ़ चुका हूँ उस पर अमल कर सकूँ •••? उस से भी अहम (गंभीर) तो यह था कि मैं कितना अपने अक़ीदह पर साबित क़दम रह सकूँगा, और दूसरों को भी समझा सकूँगा, जो व्यक्ति ग़लत अक़ीदह रखता हो वह समाज में अपना कोई असर नहीं छोड़ सकता, यह मुमकिन न

था कि मैं अपनी "तौहीद" लपेट कर रख दूँ और दूसरों को उनकी गुमराही में छोड़ दूँ, फिर कुछ समय के बाद वह मुझे भी अपनी खुराफात में डुबो देंगे, इस लिए हमारे लिए ज़रुरी है कि मैं उनसे अच्छी तरह से बात करूँ , उन्हें इस धोके में न रहने दूँ कि मामला बिल्कुल सरल है, बल्कि शिर्क से डराना मेरा फर्ज़ है, और उससे बचे रहना उन पर ज़रुरी है । खुराफात का दारो मदार (निर्भर) बहुत सी गुमराहियों पर होता है, जिसमे संदेह (शक) का गुज़र भी नहीं होता इसी लिए ज़रुरी है कि उसका पीछा किया जाये, उसे समाप्त किया जाए या कम से कम उसकी बढ़ौत्तरी रोकी जाए, ताकि वह दूसरों को भी अपने लपेट में न ले लें इन तमाम असबाब के कारण मैंने यह फैसला किया कि उस आदमी के सामने तौहीद की व्याख्या (शरह) करनी चाहिये और अल्लाह तआला पर भरोसा करना चाहिये, यह मामला आसान न था, इस के लिए सब से पहले ज़रुरी यह था कि मैं उसे विश्वास व यक़ीन दिलाऊँ, उसके और शेख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब के बीच जो ख़ला (खालीपन) है उसे भरूँ फिर उस के बुद्धि में एक जमाने से वहाबी और वहाबियत के विषय में जो कुछ है उसका निवारण (इज़ाला) करूँ, बात की शुरुआत में उसने वहाबियत पर बहुत सारे आरोप लगाए, लेकिन अल्लाह जानता है कि तौहीद की दावत उससे ऐसे ही बरी (निर्दोष) है जैसे कि भेड़िया यूसुफ अलैहिस्सलाम के ख़ून से बरी है।

मैंने बड़े जोश और जज़्बे के साथ इस बात की कोशिश की कि तौहीद की दावत पर जो नफ़रत और बैर के हमले होते हैं उसके कारण बयान (वर्णन) करूँ, कैसे इस दावत ने शरीअत के नियम को ज़िन्दा किया जिस में छल कपट, धोखा और मकर व फरेब करने वालों की मौत थी, और इस दावत ने क़ब्र के रखवालों और मज़ारों के मुजाविरों को खत्म किया जो लोगों का माल खा जाते थे, धोखा देते थे कि वह बरकात व हसनात लोगों में बांट रहे हैं, और जन्नत में उनके लिए मकान दिलाने के वादे भी करते हैं, हालाँकि जन्नत में स्थान ख़ास है, और समय हाथों से जा चुका है।

((ولاحول ولا قوة الا بالله العلي العظيم))

मैंने उसके मुँह पर भलाई के चिह्न निशान देखे उसने डर से आँखें फैला दीं जैसे वह होश में आ रहा है, इसके बावजूद वह उन औलिया का दिफा करने लगा जो क़ब्रों में आराम कर रहे हैं, लेकिन अपनी रूहों के द्वारा दुनिया में तसरुफ (अधिकार) कर रहे हैं, वह हर जुमा की रात को कुत्ब (कुत्ब उस वली या आबिद को कहते हैं जिसके बारे में यह (बातिल) अक़ीदह रखा जाये कि उसके सिपुर्द किसी इलाका या बस्ती का इन्तेज़ाम है) के पास इकट्ठा होते हैं, यहाँ तक कि मशहूर औरतें भी क़त्बों से मिलती हैं, वह दुनिया के हालात पर नज़र रखते हैं।

❁ मैं नहीं चाहता था कि तीस वर्ष से इस के दिल में बैठे अक़ीदे को अभी हिला दूँ, मैंने इतने ही पर बस किया और उस से कहा कि वह उन क़ब्र वालों के हालात के बारे में फ़िक्र करे ! यह लोग अल्लाह तआला के पास ज्यादा बुज़ुर्ग हैं या मुहम्मद (स॰) ? !! वह इस मामले में ग़ौर-व-फ़िक्र करे और फिर मेरे पास नतीजा पेश करे, उसने मुझ से वादा किया कि वह उस पर ज़रुर ग़ौर करे गा लेकिन मुझ से कहा कि मैं इस सफर में "तनता" तक उसका साथ दूँ, मैने कहा यह नामुमकिन (असंभव) है, अगर वह अपने बच्चा के जीवन के खातिर "सय्यद बदवी" के पास जा रहा है तो उसका साफ मतलब यह है कि उम्रें सय्यद बदवी के हाथ में हैं, उसने ग़ौर से मुझे देखा और चिल्लायाः

कुफ्र न कर ऐ आदमी •••?

मैने उस से कहा :

हम में कौन दूसरे को कुफ्र की दावत दे रहा है •••?

मैं जो कि तुझ से यह तलब कर रह हूँ कि तू अल्लाह तआला की ओर मुड़ जा •••? या तू कि मुझ से ज़िद कर रहा है कि मैं "सय्यद बदवी" की ओर मुड़ जाउँ•••?

वह चुप रह गया और उसने मेरे इस तरीक़ा को अपनी दावत की तौहीन समझा, वह अपनी पत्नी, बच्चा और बकरे के साथ क़ाहिरा में अब्बासिया से "तनता" के लिए चल पड़ा •••! मैं उन्हें अलविदअ कहने लगा तो

पति के कान में आहिस्ता से कहा : अगर वह वापसी में इस शिर्क के जश्न में शिरकत के बाद मेरे पास न आये तो मैं उसका मशकूर रहूँगा, वरना वह मुझ से सिवाए दुख के और कुछ न पायेगा ••• उसके ताज्जुब का ठिकाना न था, यह अजीबो ग़रीब क़ाफिला (यात्री गण) अपने बकरे साथ "तनता" की ओर चल पड़ा •••!

मेरी पत्नी मुझे बुरा भला सुनाने लगी कि मैने उनके साथ बुरा बरताव किया, हालाँकि वह अपने बच्चा पर खौफ खा रहे थे, यह बच्चा उनकी बड़ी उम्र में पैदा हुआ, बहुत सारे बच्चों के मर जाने के बाद उसकी पैदाईश हुई मैने अपनी पत्नी से कहा : अगर बच्चा ज़िन्दा रहता है तो इसलिए कि अल्लाह तआला उसकी ज़िन्दगी चाहता है, और अगर मर जाता है तो इसलिए कि अल्लाह तआला वही चाहता है, उसके अहकाम में कोई साझीदार है न उसके इरादा में कोई शरीक है।

❁मैं फिर समाचार पत्र (NEWSPAPER) की आफिस को चला गया जिस में मैं काम कर रहा था, अचानक डा॰ साहब ने मुझे फ़ोन किया, वह अपने किसी मामला में मुझ से बात करना चाहते थे, उनके ध्यान में भी यह बात न थी कि वह किताब के विषय में मालूम करें कि उसने मुझ पर क्या असर किया •••? मैने खुद उनसे कहा कि किताब में जो चीज़ें हैं उनके बारे में आप से कुछ पूछना चाहता हूँ, रात में हम मिले, मैने इस मामला की उनको सूचना दी जो "सईद" से मेरे पास आया

था, उन्होंने मेरी कोशिशों पर कोई बात नहीं की जिस में मैं अपने नातेदारों को उसके शिर्क होने का विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहा था, हालाँकि कुछ दिनों पहले तक मैं खुद भी उसी में डूबा हुआ था, फिर मैने उन से कहा : क्या तुम्हें तअज्जुब नहीं कि मैं उन्हें वह सब कुछ कह रहा था जो आप मुझ से कहते थे •••?

उन्होंने पूरे इत्मिनान से कहा : उन्हें पूरा यक़ीन था कि मैं किसी न किसी दिन दावत के लिए मूफ़ीद साबित हूँगा, फिर कहा यह सारी चीज़ें तुम से केवल आधी किताब पढ़ने से वाक़े हुई अगर तुम बाक़ी किताब भी पढ़ लेते तो तुम्हारा क्या हाल होता ? और बहुत तेज़ी के साथ हँसने लगे।

कुछ दिनों के बाद मुझे मालूम हुआ कि मेरी वह रिश्तेदार "तनता" से सीधे "सईद" चली गईं हमारे पास नहीं आईं, वह मुझ पर गुस्सा थीं मेरे विषय में खानदान के तमाम बड़े लोगों से शिकायत कीं, दूसरे हफ़्ता अचानक मेरा दरवाज़ा खटखटाया गया, मेरा छोटा बच्चा देखने के लिए गया फिर यह कहते हुए लौटा :

इब्राहीम अल हर्रान •••

"**अल हर्रान**" यह तो मेरी खाला ज़ाद बहन का पति है ••• क्या हुआ •••? क्या वह नए बकरे के साथ आये, एक नई नज़र के साथ एक नये मज़ार के लिए ••• या फिर क्या हुआ •••? इस बार मैने पक्का इरादा कर लिया कि मेरा गुस्सा खामोशी के बजाये सख्ती के साथ

ज़ाहिर हो गा, मारपीट का मामला ही पेश क्यों न आ जाये ••• मैं सख्त गुस्सा की हालत में गेट के ओर चल पड़ा••• क्या देखता हूँ कि "अल हर्रान" मुसाफहा के लिए अपना हाथ बढ़ा रहा है मैंने उसे अन्दर आने की दावत दी उसने इन्कार किया••• फिर वह क्यों आया •••? वह दिल लुभाने वाली मुस्कुराहट के साथ कहने लगा कि उसे "शेख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब" किताब चाहिये, मैं तअज्जुब से उसे देखता रहा और उसके क़रीब बैठ गया•••!

जाहलियत का ये ज़बरदस्त क़िला मिस्मार हो चुका था••• लेकिन क्यों ? और कैसे ? मेरा दोस्त इब्राहीम भागते हुए आया••• और इस बात पर डटा हुआ था कि तौहीद का सफर शुरु करे, ज़रुर उसके पीछे कोई खास कारण है वरना इतना बड़ा इन्क़िलाब बिना किसी कारण के नहीं हो सकता, कोई चीज़ है जो उसके दिल की गहराईयों में असर कर रही है और उसे हक़ाइक़ से अवगत (आगाह) कर रही है एक ज़माने से जिस से वह ग़ाफिल था, मेरा डर और बेसुधपन को देख कर उसने कहना शुरु किया, और उसके जुबान से निकलने वाला हर जुम्ला (शब्द) इतना भारी था जैसे कि चोटी पर से पत्थर लुढ़क रहे हों••• मेरे कान फटने लगे••• उसने कहा :

मेरा बच्चा हमारी वापसी के बाद मर चुका•••!

إنا لله وإنا إليه راجعون यह चौथा लड़का है जो एक के बाद दूसरा मरा है, जब कभी बच्चा तीसरे साल तक पहुंचता है••• अपने भाई जा मिलता है, इसके बारे में डाक्टरी मशवरे के बजाए कि हो सकता है माता पिता के खून की किसी खराबी के कारण मर्ज़ लाहक़ हो, इसका इलाज करवाने के बजाए हमेशा किसी न किसी मज़ार की नज़र करता और उसकी ज़ियारत करता, कभी "बनू सवीफ" के ग़ार की ज़ियारत करता, लेकिन उसका कुछ लाभ न हुआ, इस मूर्खता व जुल्म के बावजूद ••• मुझे उस पर तरस आ रहा था ••• मुझे उस पर वास्तव में दुख हुआ••• मैंने उसका हाथ थामा और घर में दाखिल हुआ और उस से तफसीलात सुनने लगा •••!

वह "तनता" से अपनी पत्नी के साथ घर लौटा ••• वह अपने साथ बकरे के कुछ हिस्से भी लेते गये जिसे "सय्यद बदवी" के चौखट पर उन्हों ने ज़िब्ह किया था, जिहालत की तालीमात का यह आदेश था कि कुछ हिस्से अपने साथ लेते जायें••• ताकि बरकत उनके चाहने वालों में भी बंट सके, चूंकि उसकी हिफाज़त अच्छी तरह से नहीं की गई थी इसलिए वह सड़ गया था, और जिसने भी उसे खाया वह बीमार हो गया, उसे किसी तरह से सब्र किये, और बच्चा सख्त बीमार हो गया, माँ ने यह समझा कि अब "सय्यद बदवी" मुदाख़लत (बाधा) करेंगे, लेकिन अफसोस कि बच्चा की हालत दिन बदिन गिरने लगी, डाक्टर के पास ले गई

बच्चा को देख कर वह घबरा गया, कि माँ इतने दिनों तक उसे तकलीफ में छोड़े रही••• उसका मरज़ चार दिन पुराना हो चुका था••• , डाक्टर सोच में पड़ गया लेकिन मायूस (निराश) नहीं हुआ••• और दवायें लिखा ••• लेकिन बच्चा कमज़ोर हो चुका था, मर्ज़ को बरदाश्त न कर सका और अल्लाह तआला को प्यारा हो गया!

बच्चा की मौत से परेशानियों का सिलसिला शुरु हुआ, यह सदमा (दुख) माँ की बरदाश्त से बाहर था, वह होश खोदी, हर चीज़ को गोद में उठा कर उसे थपकने लगती जैसे कि वह उसका बच्चा है••• बाप इस सदमा या दुख के बाद गंभीरता से सोचने लगा, उस पर यह हक़ीक़त स्पष्ट होने लगी कि सारा मामला अल्लाह ही के हाथ में है••• जिसका कोई साझीदार नहीं••• हर साल उसका मज़ारों के लिए जाना उसको हानि के अलावा कोई और चीज़ न दे सका,••• उसने इस बात को मान लिया कि हमारे बीच की बातचीत उसके कानों में गूँज रही थी••• फिर वह ख़ामोश हो गया•••! मैंने उनके दिलासा के लिए कुछ जुमले कहे जो आम तौर पर ऐसे समय पर कहे जाते हैं••• अभी उसकी बात नामुकम्मल थी••• उसने माँ की तफसील नहीं बयान की इफ़ाक़ा (रोग में कमी) हुआ या नहीं?

मैंने उस से कहाः माँ को अल्लाह तआला ने दुख और ग़म से छुटकारा दे दिया होगा•••?

जवाब दिया उसका सर झुका हुआ था••• उसके घर वाले कुछ मज़ारों और गिर्जाघरों की ज़ियारत के लिए अड़े हुए थे, किसी भी नफसियाती डा॰ को दिखाने के लिए राज़ी नहीं बल्कि एक औरत के पास ले गये जिस की एक "जिन" से दोस्ती है, उसने उन्हें कुछ लिख कर दिया••• इस तरह दिन बदिन उसका रोग बढ़ता रहा••

यह दज्जाल जो कुछ कर रहे हैं पैसों के साथ वह भी ख़त्म हो रहा है•••!

जब उसने ज़बरदस्ती की••• और कहा या तो डा॰ को दिखायें••• या उस से तलाक़ (पत्नी त्याग) ले लें••• इसलिए कि वही उसकी खराबी का कारण हैं••• उसकी माँ नाराज़ हो गई और तलाक़ ही मांगने लगी इस तरह वह ना चाहते हुए भी उसे तलाक़ दे दिया•••

इस के कहानी से मुझे बड़ा दुख हुआ, वह किताब जो डा॰ जमील से प्राप्त किया था अपनी ज़रुरत के बावजूद मैंने उसे दे दिया••• कुछ देर तक उसे उलट पलट करता रहा••• उसके आखिर में जो बातें लिखी हुई थीं तेज़ आवाज़ से पढ़ने लगा जैसे कि वह अपने आप को सुना रहा है। "नवाक़िज़े इस्लाम" शैखुल इस्लाम मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब की बातें"

﴿ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ﴾ (المائدة: 72)

क्योंकि जो अल्लाह तआला के साथ शिर्क करेगा अल्लाह तआला ने उस पर स्वर्ग निषेध (हराम) कर दी है तथा उसका ठिकाना नरक है एवं अत्याचारियों (ज़ालिमों) का कोई सहायक न होगा। (सूरतुल मायद 72)

इसी में ग़ैरुल्लाह के लिए ज़िब्ह करना भी है जैसे कोई "जिन" या क़बर के लिए ज़िब्ह करे।

सर उठाया, मुझे घूरने लगा••• किताब लिया और चला गया, थोड़े दिनों बाद लौटाने का वादा किया और मुझ से कहा कि मैं "तौहीद" के सफर को पूरा करने के लिए कुछ और किताबें उसे दे दूँ।

इब्राहीम चला गया, उसका यह भंयकर मामला मेरे वजूद को हिला रहा था, यह किसी एक आदमी की मुसीबत नहीं, किसी जमाअत की परेशानी हीं, बल्कि यह बहुत से मुल्कों में बहुत से मुसलमानों की मुसीबत है, खुराफात उन्हें हक़ीक़तों से अधिक पसंद हैं, गुमराही हिदायत से अधिक उन्हें पसंद है, बिदअतें उन्हें सुन्नत से अधिक दिलचस्प लगती हैं।

मैं डा॰ जमील से फ़ोन पर बात करना चाहा••• उन्हें इब्राहीम की बातें सुनाना चाह रहा था लेकिन मुलाक़ात नहीं हुई, मैं क़तर में एक माहनामा (मासिक पत्र) में काम शुरु कर चुका था, अदब अरबी में अपराध के विषय में मज़मून (निबन्ध) लिखता था, एक दिन फ़ोन आया, वज़ारत दाखला का एक अधिकारी बात कर रह था, मुझे बुला रहा था इस लिए कि मैं अपराध पर

लिखने वाला सहाफी (पत्रकार) था••• एक व्यक्ति के क़त्ल में जांच पड़ताल चल रही थी मिस्त्री का काम करता था जिसकी लाश दो दिन पहले एक थैला में मिली थी•••!

मैं सब काम छोड़ कर वहाँ पहुंचा••• तअज्जुब की बात है कि इस जुर्म की बुनियाद भी शिर्क पर मबनी (निर्भर) थी, धोका और शाबदह (जादू) पर क़ाइम थी, मक़तूल (निहत) "जिन" से दोस्ती का दावा करता था, मुश्किल बीमारियों और हाजतों को पूरा करने के घमंड में मुब्तला था, साथ ही साथ वह मिस्त्री का काम भी करता था।

क़ातिल "सईद" का रहने वाला था, पच्चास वर्ष से अधिक उसकी उम्र थी, एक औरत से विवाह कर चुका था जिस से औलाद नहीं हुई, उसे तलाक़ दे दिया और एक सत्तरह वर्ष की लड़की से विवाह किया लेकिन उस से भी औलाद नहीं हुई••• उसका अपना अन्दाज़ा था कि उसकी पहली पत्नी ने बदला लेने के लिए उस पर जादू करा दिया था, जिस के कारण उसे औलाद नहीं हो रही थी, उस आदमी से मिला जो जवान था, उम्र चालीस वर्ष से कम थी, उस से इलाज (उपचार) चाहा, उस दज्जाल धोका बाज़ ने इस घड़ी से फायदा उठाना चाहा इस लिए उसके घर गया, ज़बरदस्त खाने के बाद इस धोकेबाज़ ने इत्र (खुशबू) ऊद (एक खुशबू दार लकड़ी) वग़ैरह मांगा कि "जिन" की हाज़िरी के

लिए यह ज़रुरी है, वह अपनी इस खूबसूरत पत्नी को उसके पास छोड़ कर ख़रीदने के लिए चला गया •••!

ऐसे मौक़ा पर क्या हो सकता है हमें अन्दाज़ा है उसने उसकी पत्नी पर दस्तदराज़ी की उसके साथा आबरू रेज़ी (सतीत्व हरण) करने की पूरी कोशिश की, वह भाग कर बाहर जाने लगी, अचानक पति से दरवाज़े पर मुलाक़ात हो गई, चूंकि वह अपनी पाकिट (पर्स) भूल गया था, उसने गुस्सा से पूरी कहानी सुनाई, पति गुस्सा हुआ और उसे लाठी से मारना शुरु किया यहाँ तक कि उस की मौत हो गई••• अब उस लाश से छुटकारा पाने की कोशिश में था।

रात में निकला, एक थैला खरीदा, उसमें लाश डाल दिया, थोड़ी रात गुज़र जाने के बाद उसे ले जाकर मैदान में फेंक दिया, घर आकर सारी निशानियों को मिटा दिया और समझा कि इस शैतान से छुठकारा मिल गया।

पुलिस को लाश मिलने के बाद उस की खोज में निकली दूकान पर जब पूछा कि किसने इसे खरीदा था, तो एक दूकानदार ने उसका पता दिया, पुलिस ने उसे पकड़ लिया, और उसके घर की तलाशी ली जिस से जुर्म की निशानियाँ मिल गईं, पुलिस ने ज़बरदस्ती की जिस से पूरी तफसीलात सामने आ गई•••!

۞ मेरा यहाँ हाज़िर होना इत्तिफाक़ न था बल्कि हर चीज़ अल्लाह की हिक्मत व तक़दीर से जारी थी, मेरे ही सामने ऐसा मामला पेश आया जिसका संबंध अक़ीदह की गुमराही से था, ताकि मैं दूसरों से उस पर बहस व मुबाहिसा कर सकूं••• खुराफात कैसे रवाज पाती हैं, बिना किसी शक्ति के वह आसानी से कैसे फैल जाती हैं•••? क्या इसलिए कि उसकी तिजारत करने वाले दूसरों से अधिक ज़हीन होते हैं•••?

यह परेशान लोग जो लाखों की संख्या में हैं, इन कामों के लिए क्यों आमादह व तैयार होते हैं, उस पर ईमान क्यों लाते हैं ? क्या यह बुतपरस्ती है यानी महसूस और ठोस चीज़ पर ईमान लाना जो लोगों के दिमाग़ों में हज़ारों सालों से रची बसी है, क्या यही बुतपरस्ती नये अन्दाज़ से लोगों पर असर अन्दाज़ हो रही है, और नफसियाती हालात उसका साथ दे रहे हैं जिस से वह फल फूल रही है !!?

क़ातिल और मक़तूल इस जुर्म में ग़लत अक़ीदह के हैं, इस्लाम के नाम के अलावा कुछ भी नहीं जानते, मक़तूल जादूगर है, जो अल्लाह के बन्दों में बुराई फैलाता है, झूट कहता है और दावे करता है कि उसका "जिन" से दोस्ताना है वह अच्छाई और बुराई अता करता है, तन्दुरुस्ती व रोग दे सकता है यह सारी चीज़ें वह "जिन" की सहायता से करता है यह सब शिर्क है जिस से लोगों को दुख है। रहा क़ातिल वह अपनी मूर्खता की अधिकता के कारण इस अक़ीदह में मुब्तिला

है कि उस जैसा एक इन्सान उसे बच्चा देने पर क़ादिर है अगर वह सहीह अक़ीदह का होता और उसके ज़ेहन में यह बात होती कि अल्लाह तआला का कोई साझीदार नहीं लाभ व हानि अल्लाह तआला ही के हाथ में है, यह बातें उस के दिल में बिठा दी जातीं तो वह कभी भी एक धोकेबाज़ के हाथ में न फंसता और उसका सच्चा अक़ीदह ऐसे धोकेबाज़ों के फन्दे में गिरने से ज़रुर उसे बचाता•••!

❁कई बार यह बात देखने में आई है कि कुछ अपने आप को खुराफात के रवाज देने में लगा देते हैं, उसका दिफ़ाअ (रक्षा) करते हैं, उसके लिए मारने मरने पर तुल जाते हैं, हम देखते हैं कि लोग अपनी मजलिसों में बयान करते है कैसे फलाँ शैख ने उसे मुसीबत से छुटकारा दिया, फलाँ शेख़ अगर उसका इलाज न करते तो वह उस साल फलाँ तरक़्क़ी हरगिज़ न कर पाता, वह अपनी पत्नी से सख्त इख़्तिलाफ़ में था और दोनों के बीच तलाक़ की घड़ी आने ही वाली थी कि शेख़ ने कुछ लिख दिया जिसे वह अपने बग़ल में रख लिया सब मसाइल समाप्त हो गये, यहां मुझे एक वाक़िआ याद आ गया, एक खातून का जो जामिआ अज़हर से फारिग़ हो चुकी थी, ज़राअत (खेती) में उस ने P.H.D. की डिग्री भी प्राप्त की थी, अब वह वज़ीर ज़राअत की आफिस की मुदीर है, यह औरत जो P.H.D. है उसका पति एक दिन उसके तकिया के नीचे एक तावीज़ देखा

उसके विषय में अपनी पत्नी से पूछा••• उसने कहा कि उसने लगभग पच्चास पौंड उस के लिए खर्च किये••• ताकि वह उसके दिल को अपने ओर मोड़ सके, चूंकि वह कुछ दिनों से उसके अन्दर कुछ बेरग़बती (अनिच्छा) महसूस कर रही थी, उसका नतीजा यह निकला कि पति ने उसे तलाक़ दे दिया••• इस क़िस्सा को उसके वकील ने खुद बयान किया, जो उसके पति के खिलाफ मुक़द्दमा लड़ रहा है•••!

۞ खुराफात बढ़ कर चोटी पर पहुंच जाते हैं, जब उसमें खास जानकारी रखने वाले हज़रात मशाईख़ व मज़ारात की खुसूसियात बयान करने लगते हैं, फलां "सय्यदह" की ज़ियारत शादी न होने वाली लड़कियों की शादी के खातिर होगी, रोज़ी के मसाईल के लिए फलां शेख़ की मज़ार की ज़ियारत करनी चाहिये, फलां बुजुर्ग सय्यदह बीबी की क़ब्र की ज़ियारत, मुहब्बत, तलाक़ जुदाई के मसाईल को हल करने के लिए की जाएगी, बच्चों की बीमारी के लिए कोई और क़ब्र ••• यह सब बहुत बड़ी साज़िशें हैं जिसके द्वारा भोले भाले लोगों को फांसा जाता है गोया कि उन्होंने कुरआन नहीं पढ़ाः

﴿وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ﴾ (الأنعام:17)

"और अगर अल्लाह (तआला) तुझ को कोई कष्ट दे तो उसको दूर करने वाला अल्लाह तआला के सिवा कोई

नहीं है और अगर वह तुझ को अल्लाह तआला कोई लाभ पहुंचाए तो वह हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाला है"। (सूरतुल अनआम 17)

शायद उन्होंने यह हदीस भी नहीं सुनीः

((مَن تَعلَّقَ تَمِيمَةً فَقَد أشرَكَ))

"जिसने तावीज़ लटकाई उसने शिर्क किया"

(इसको अहमद ने मुसनद में और हाकिम ने मुस्तदरक में रिवायत किया है)

खुराफात पर विश्वास करना केवल आम लोगों का या जाहिलों का तरीक़ा है, बल्कि अच्छे पढ़े लिखे और बड़ी बड़ी यूनीवर्सिटी से पढ़े-लिखे लोग भी इस में डूबे हुए हैं, इस का मतलब यह हुआ कि यह खुराफात हर एक पर असर अन्दाज़ हो सकती है, सिवाए उन लोगों के जिन्हें सहीह अक़ीदह की नेमत मिल गई हो, इस में कोई शक नहीं कि आदमी जब अल्लाह पर अपने ईमान को मज़बूत करता है कि अल्लाह ही हर चीज़ का मालिक व रब है, उसका कोई साझीदार व शरीक नही, ऐसा आदमी ईमान की हिफाज़त में रहता है, अपने अक़ीदह के द्वारा महफूज़ रहता है, फसादी चीज़ें उस तक नहीं पहुंचतीं ••• बल्कि उसके ईमान की चट्टान पर यह सारे खुराफात टुकड़-टुकड़े हो जाते हैं••• क्यों ? इसलिए कि उसने अपने मामला को अल्लाह के हवाले

कर दिया और मामला उसके पास बहस के ही नहीं रहता।

अल्लाह पर ठोस ईमान, सहीह अक़ीदह की प्राप्ति किताबों और यूनीवर्सिटी में नहीं मिलता बल्कि यह बहुत आसान है, अल्लाह तआला ने उसे हर एक की कुदरत में रखा है, जिस से कोई फक़ीर अपने फक़र के कारण महरुम नहीं रहता और न कोई मालदार अपने माल की वजा से उसे समेट लेता है•••!

❁ मैं यह बातें लिखने में लगा हुआ हूं कि अचानक शोरो गुल होने लगा जिस के साथ तबला की तेज़ आवाज़ें भी हैं, जिस से रात को सुकून गारत हो रहा है, यह शोर बराबर बढ़ रहा है, और पूरे मुहल्ला में गूंज रहा है, रागों और आवाज़ों का मुझे एक लम्बा तर्जुबा है, मैं समझ गया कोई मालदार पड़ोसन "ज़ार" (ज़ियारत) की महफिले जश्न कर रही है, और उसने ज़रुर अपनी सारी सहेलियों को यहां बुलवाया है, जो उस की तरह "जिन" के असरात से मुतअस्सिर हैं, यह पहली बार नहीं है बल्कि वह हर साल इस तरह का जश्न मुक़र्रर करती है ताकि उस जिन को राज़ी कर सके जो उसके शरीर में बसता है •••!

मैंने बहुत कोशिश की कि इस वाक़िआ से जान छुड़ाऊँ लेकिन मेरे बस में न रहा, मैं लिखना छोड़ कर पढ़ना चाहा इसी पसोपेश में था कि मेरे एक दोस्त तशरीफ लाए जो अज़हर के मशहूर आलिमों में से थे,

औक़ाफ और अज़हर के इदारा में काम करते हैं, मैंने खुशी-खुशी उनका इस्तिक़बाल (स्वागत) किया ••• मुझे उनसे तबादले ख्याल (विचार विनिमय) करना पसन्द था, शायद इसके द्वारा मैं इस शोरो गुल की मुसीबत से मैं छुटकारा पा सकूं।

मैंने उनसे अपनी पड़ोसन की शिकायत की, हम "जिन" और लोगों की उस से तकलीफ के विषय में बातचीत करने लगे, गुफतगू के बीच यह बात भी आई कि बहुत सी औरतें दावे करती हैं कि वह उन पर सवार होजाता है, और मर्दों और ओरतों की एक बड़ी संख्या "ज़ार" ज़ियारत के जलसे मुन्अक़िद (आयोजित) करती है, मेरे तअज्जुब की इन्तिहा न थी जब मैने देखा कि वह आदमी जो अज़हर की बड़ी डिग्री वाला है उस की एक सगी बहन थी, "जिन" उस पर हावी (गालिब) होगया था, उस के पति से लड़ाई के बाद, "जिन" ने उस के दाहिने हाथ को कई दिन तक नाकाम कर दिया था, और उस समय उसे छोड़ा जब उन्होंने उसके खातिर "ज़ार" का जश्न मुकर्रर किया, बुज़ुर्ग खातून ने "जिन" और बहन के बीच अमन के साथ जीने का समझौता करवाया••• इस शर्त पर उसने उस के दाहिने हाथ को छोड़ दिया कि वह साल में एक बार यह जश्न मुकर्रर करें।

❁ यह एक आलिम की बात थी••• मुझ पर खामोशी तारी हो गई ••• मैं बेचारे इब्राहीम अल हर्रान

के विषय में और उसकी अनपढ़ पत्नी के विषय में सोच रहा था, "ज़ार" के विष्य में इतने बड़े आदमी की जब यह बात हो तो बेचारे इब्राहीम और उस की पत्नी का क्या कुसूर है, तबला की तेज़ आवाज़ें अभी भी हमारे कानों को बहरा कर रही थीं, हमारी खामोशी उन जुनूनी आवाज़ों में खोई जा रही थी जो बड़े ज़ोर व शोर से "जिन" की रज़ा और शैतानों की खुश्नूदी में लगी हूई थीं •••!

इस अज़हरी आलिम के साथ मेरी मुलाक़ात ख़त्म हो चुकी थी, वह भी खुराफात और जिन्नात की झूठी बातों पर ईमान लाने वाला था, मैने महसूस किया कि मेरा समय इन बातों में और यह "ज़ार" की तूफानी आवाज़ों में खो चुका है।

۞ सुबह मैं टेलीफून की घंटी पर जागा, घंटी काफी देर से बज रही थी जिस का मतलब था कि फ़ोन क़ाहिरा से बाहर का है, मैंने फोन उठाया, फून "सईद" से था और मेरे ख़ालू फ़ोन कर रहे थे, (यानी इब्राहीम अल अर्रान) के सुसर वह मुझ से कह रहे थे कि वह सब कल सुबह पहुंचेंगे ••• एक अहम मसअला के ख़ातिर वह मेरे पास आने वाले थे ••• मैंने उन्हें खुशआमदीद कहा, और कहा कि मैं उनका इन्तेज़ार करुंगा, मेरे पास इस के अलावा कोई चारह नहीं था उस के कई सबब थे !!

1—इसलिए कि मैं उस आदमी की बड़ी इज़्ज़त करता था, उनकी आवाज़ में मैंने बड़ी आजिज़ी और मिसकीनी महसूस की, मैं किसी हाजतमन्द (इच्छुक) के सामने बड़ा नर्म हूं, अपनी ताक़त भर उस की ख़िदमत में लग जाता हूं ••• पूरी कोशिश करता हूँ कि अल्लाह तआला मेरे द्वारा खैर का दरवाज़ा खोल दे, यह चीज़ें मेरा बहुत से समय ले लेती हैं, और काफी तकलीफ भी हाती है लेकिन मैं अल्लाह तआला के पास सवाब की उम्मीद पर यह सब सह लेता हूँ ।

दूसरे दिन यह ग़मगीन (दुःखित) क़ाफ़िला पहुंचा जिस में मेरी ख़ाला, खालू, उनकी बेटी, इब्राहीम अल हर्रान की पत्नी थी जो अपने बेटे के वफात के बाद होश खो चुकी थी, मैं इस क़ाफिला के साथ बड़े दर्दनाक हालात में खो गया, बेचारी की हालत बहुत ही खराब थी, उसके बाप ने बड़े ग़म से इलतिजा (निवेदन) की ••• कि मैं अपने बच्चे से बात करुँ जो नफसियाती और असबी बीमारियों का माहिर है, और "अब्बासिया में दारुल इसतिशफा" में काम करता है जो नफसियाती और असबी बामारीयों का दवाख़ाना है, ताकी उसे पहले दर्जा में जगह मिल सके।

माँ रो रही थी उसे अपनी ग़लतियों पर पछतावा आ रहा था, कि उसने अपनी नादानी के कारण बीमारी को यहाँ तक पहुंचा दिया था, वह इस बात पर ज़िद कर रही थी कि बच्ची का इलाज मशाईख और मज़ारों के

पास होगा न कि डाक्टरों के पास, उसने इब्राहीम अल हर्रान के मामला में भी अपनी ग़लती का इतराफ किया, लेकिन उसका उज़र (बहाना) था कि यह सब कुछ उसने जिहालत की वजा से किया है, और दसियों औरतें ये दवा करती थीं कि उन्हें उन मशाईख़ से, मुजाविरों से, धोका बाज़ों से फायदा हुआ, जैसा कि मसल मशहूर है :

"तर्जुबाकार से पूछो तबीब से न पूछो"

अल्लाह के फ़ज़्ल से हमने उसके लिए जगह तलाश ली, मेरे बच्चा ने कहा : उसकी हालत क़ाबिले इत्मिनान है मायूसी की बात नहीं, बेपरवाही ने यहाँ तक मामला पहुंचा दिया, एक हफ़्ता के इलाज से उसकी हालत बेहतर होने लगी, बिजली के शार्ट के द्वारा उस का इलाज किया गया, इसी दौरान इब्राहीम अल हर्रान ने मुझे फ़ोन किया, मैने उस से कहा मैं बहुत ज़रुरी काम के विषय में उस से मिलना चाहता हूँ, जब वह आया तो मैने सारा मामला उसे बताया, और उस से कहाः डाक्टरों का विचार है कि उस को उसके पति के पास लौटा देना भी इलाज का एक हिस्सा है, मैंने महसूस किया वह तौहीद की किताबों के पढ़ने के बाद एक नए इन्सान में तबदील हो चुका था ••• वह शब्द जो उस की जुबान पर चढ़े हुए थे यानी मुसहफ की क़सम, अंबिया की क़सम, या कभी कभार औलिया और बुजुर्गों की क़सम, वह सारे शब्द बिलकुल ख़त्म हो चुके थे••• अब वह उस आदमी की तरह ज़िन्दगी गुज़ार रहा था

जो सिवाए अल्लाह तआला के किसी और की इबादत (उपासना) न करता हो, अल्लाह के अलावा किसी और से न डरता हो, अल्लाह के अलावा किसी और से उम्मीद न लगाता हो, उसकी पत्नी के लौटाने के विषय में जब मैंने बात की तो उसने लौटाने के लिए शर्त रखी कि उस के माँ-बाप पुराने अक़ीदों से तौबा कर लें, पत्नी के बारे में उसने कहा कि वह उस का ज़िम्मेदार है, मैंने उन के बीच एक मजलिस मुनअक़िद (आयोजित) करवाई जिस में उस की पत्नी के अलावा सब लोग थे इसलिए कि वह दवाख़ाना में थी, उसकी सारी शर्तें उन लोगों ने क़ुबूल कर ली थीं।

दवाखाने में जब उसने अपनी पत्नी की ज़ियारत की तो उसका काफी लाभ हुआ, उसकी खुशी का ठिकाना न था जब उसे पता चला कि उसने दोबारा उसे अपने निकाह में क़ुबूल कर लिया, मेरे बच्चा ने कहा कि उस का अपने पति के पास लौटना और पति का उस की ज़ियारत करना असल में हक़ीक़ी इलाज था जिस से उसकी शफायाबी जल्द हो सकी, चूंकी यह अपने माँ-बाप की अकेली औलाद है ••• उसके बच्चा की वफात से उसको बड़ा सदमा (ठेस, चोट) पहुचां था••• और उस के ऊपर से उसकी तलाक़ हो गई जिस से उसकी अक़्ल मुतअस्सिर हो गई ••• लगभग चालीस दिन के बाद वह दवाखाना से निकली, उस के

माता-पिता और पति उस का इस्तिक़बाल (स्वागत) कर रहे थे वह फौरन "सईद" चले गये।

❁ इस हादिसा (दुर्घटना) के आसार अब तक मैं अपने दिल से नहीं निकाल सका, मेरे लिए यह आसान नहीं था कि मैं इस खुराफात कों यूँ ही छोड़ दूँ जो हर घड़ी दसियों लोगों बल्कि दसियों घरानों को तबाह व बरबाद कर रहे थे, यह मामला सारे ही आलमें इस्लाम में है, मैं अपने आप से पूछने लगा कि आखिर क्यों यह खुराफात हमारे अलाक़ा शर्क़ औसत में फैले हुए हैं, यह बे सरो पा (झूठी) चीज़ें हमारे समाज (SOCIETY) का नासूर हैं, जो हमें तहज़ीब (सभ्यता) का साथ देने से रोके हुए हैं।

मग़रिब और यूरपी समाज भी इन खुराफात और बे सरो पा बातों से खाली नहीं है इस के बावजूद वह तहज़ीब की लगाम लिए हुए तरक़्क़ी के मार्ग पर चल रहे हैं।

हक़ीक़त यह है कि उन की खुराफात का सरासर संबंध रूह से है ••• वह उसी की गुमराही में रहते हैं मादियात (भौतिक वाद) से उस का संबंध थोड़ा सा है, इसीलिए यह चीज़ उन की तहज़ीब की तरक़्क़ी में रुकावट नहीं है।

हमारे हाँ यहाँ मशरिक़ में •••हमारी खुराफात अक़्ल और माद्दह के मनाफी हैं, •••। इसीलिए हमारे यह खुराफात हमारी तबाही का कारण बन रहे हैं, हाल

(वर्तमान काल) में भी और मुस्तक़बिल (भविष्यकाल) में भी।

इस इजतिमाई बीमारी से निकलने के लिए कोई मार्ग नहीं है, सिवाए अक़ीदह की पाकीज़गी (पवित्रता) के, अक़ीदह को सारी आलाइशों (मलीनता) से पवित्र करने के बाद ही यह मुमकिन है।

जब तौहीद जीवन का उसलूब (तरीक़ा) बन जाए, हमारी सक़ाफत (CULTURE) और अक़ीदह बन जाए तो हमारी ज़िन्दगी से यह बादल अपने आप छट जाऐंगे, खुराफात, मक्कारी, जादूगरी, कहानत, धोके के सारे बादल खतम हो जाऐं गे।

۞ तालीम व तरबियत के सारे इदारों पर यह ज़िम्मेदारी है कि वह उस के लिए कोशिश करें, हम जिस हाल में जी रहे हैं वह उस से भी ज़्यादा तकलीफदेह (कष्टदायक) है, जो कि आप ने इन पेजों पर पढ़ा है, अगर आप सौ घर बिना किसी तऐयुन (FIXATION) के चुन लें, और उनके बारे में जानकारी प्राप्त करें तो आप खुद ब खुद इस नतीजा पर पहुँचेगे कि जो कुछ मैंने लिखा है वह तो बहुत ही कम है, हक़ीक़त उस से ज़्यादा कड़वी है •••!

﴿رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ﴾ (آل عمران:53)

हे हमारे पालनहार हम तेरी उतारी हुई वह्यी पर ईमान लाये और हमने तेरे रसूल का अनूकरण किया। बस अब तू हमें गवाहों में लिख ले। (सूरतु आले–इमरान 53)

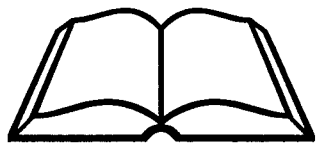

अनुवादक
मन्सूर अहमद मदनी
आमन्त्रण व प्रदर्शक कार्यालय सनाईया क़दीम
फ़ोन 4488905 –पो॰ बा॰ 255018– रियाघ 11353
सऊदी अरबिया

28/7/2004
11/6/1425